बजरंग बाण -मराठी भाषांतर

श्रीगुरु चरण सरोज रज,निज मन मुकुर सुधार।
बरनऊं रघुवर बिमल जसु,जो दायक फल चार।।

बुद्धिहीन तनु जाणिके,सुमिरो पवन कुमार।
बल,बुद्धी,विद्या देऊ मज,हरु कलेश विकार।।

जय हनुमान संत हितकारी।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी।।

जन के काज विलंब न कीजै।
आतुर दौरि महा सुख दीजै।।

जसे कूदि सिंधु महं पारा।
सुरसा बदन पै ठेला मारा।।

अग्नि में पूंछ दिये जलायी।
लंका सागरी सिन्दु बुजायी।।

लयसि जीवन लखन जब आये।
श्री रघुबीर हर्षि उर लाये।।

रघुपति कीन्ही बहुत बडाई।
तुम मम प्रिय भरत सम भाई।।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं।।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा।।

यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राजपद दीन्हा।।

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना।।

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

रामद्वार तुम राखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना।।

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हांक ते कांपै।।

भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै।।

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा।।

संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।।

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिनके काज सकल तुम साजा।।

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोई अमित जीवन फल पावै।।

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।।

साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।।

अष्टसिद्धि नव निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता।।

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै।।

अन्तकाल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।।

आणि याच श्लोकांनी पूर्ण होतो हनुमानाचा हा दिव्य बाणः

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

जय जय जय हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।

जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई।।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

www.majhimauli.com